

सोडियम क्लोराइड

डालिया साल्दान्हा

मैं हूँ सोडियम
सारणी में 11वाँ तत्व
मुलायम, रूपहला सफ़ेद, निहायत क्रियाशील
मैं मुक्त अवस्था में मिलता नहीं

मैं क्लोरीन
परमाणु संख्या सत्रह
प्रचुरता में नम्बर दो हैलोजन
सारे तत्वों में विद्युत ऋणात्मकता में नम्बर तीन

मेरे जैसे कई और भी हैं
जैसे Li, K, Rb, Cs
फिर भी हमारी आपस में कभी पटती नहीं
मैं उनके साथ रह सकता कभी नहीं

मेरा अपना हैलोजन परिवार है
सभी हर तरह से मेरे जैसे हैं
पर चाहे हमारे गुणधर्म एक जैसे हों
मैं कभी मेलजोल की कल्पना भी नहीं कर सकती

क्षारीय धातुओं के इस बड़े कुनबे में
लगता है मैं तनहा और अनचाहा हूँ
सही है, हम सबका
जन्म पृथ्वी की पर्पटी में हुआ था
तो फिर मुझे इतना अलग-थलग और भुतहा क्यों लगता है?

वैसे तो हम काफ़ी हिल-मिलकर रहने वाले
और क्रियाशील लगते हैं
लेकिन फिर भी हम एक-दूसरे से अजनबी ही हैं
अपनी-अपनी उत्कृष्टता की होड़ में डूबकर

कोई भी अपनी इलेक्ट्रॉन स्थिरता को
जोख़िम में डालना नहीं चाहता
(लेकिन कभी-कभी)

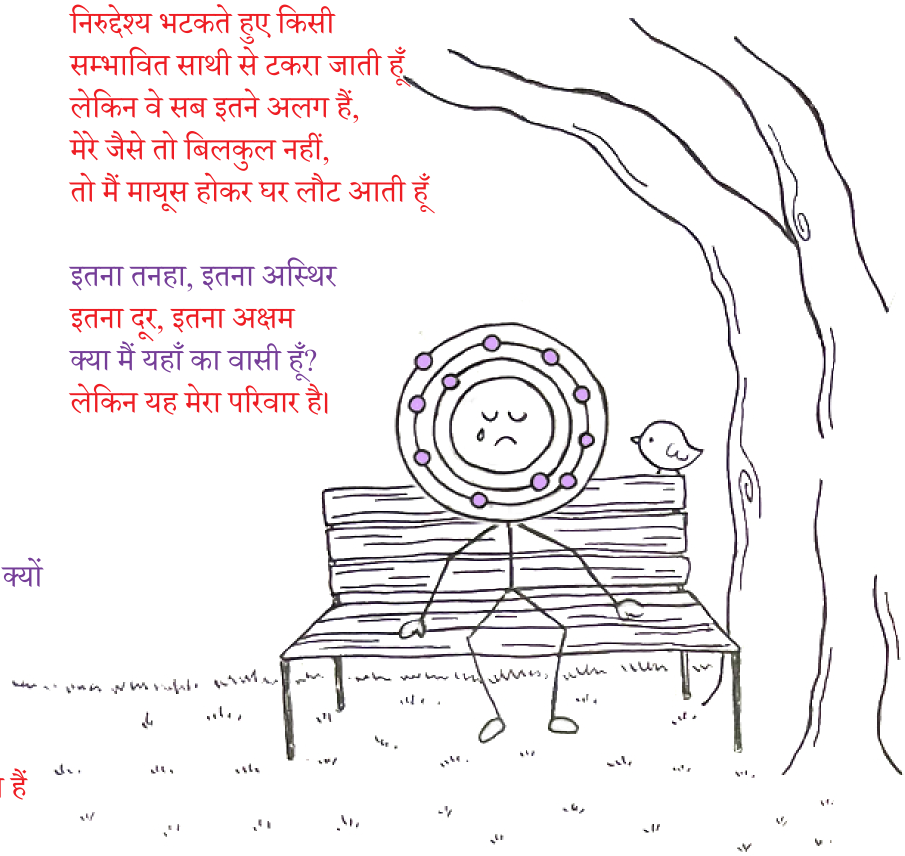
कभी-कभी मेरे दिल में ख़्याल आता है
कि मेरे समूह के बाहर कौन है
जो शायद दोस्त बन सके?
शायद इसी पीरियड (आवर्त) के दूसरे छोर पर
ऐसे कोई तत्व हैं जिनके अपने अलग रुझान हों?
कभी-कभी अपनी गैसीय अवस्था में
निरुद्देश्य भटकते हुए किसी
सम्भावित साथी से टकरा जाती हूँ
लेकिन वे सब इतने अलग हैं,
मेरे जैसे तो बिलकुल नहीं,
तो मैं मायूस होकर घर लौट आती हूँ

इतना तनहा, इतना अस्थिर
इतना दूर, इतना अक्षम
क्या मैं यहाँ का वासी हूँ?
लेकिन यह मेरा परिवार है।

जिससे पूछता हूँ, वह कहता है
मेंडेलीव की आवर्तता कहती है
लेकिन सिर्फ़ इसलिए कि
हाँ, सिर्फ़ इसलिए कि

उन सबके इलेक्ट्रॉन विन्यास मेरे जैसे ही हैं

इसका यह मतलब बिलकुल नहीं है
रसायनशास्त्र के किसी भी नियम से
कि हम साथ-साथ रहने के लिए बने हैं
(लम्बा अन्तराल)



मैं सिर्फ़ इतना करना चाहता हूँ कि
इतनी ताप-धारिता (एन्थाल्पी) संग्रहित कर लूँ
कि मुड़कर देख सकूँ कि
मेरे पीछे क्या है।
(इस पैरा के दौरान सोडियम घूमता है)

लेकिन यदि मैं मुड़ी तो डर है कि
वे देख लेंगे कि मुझमें कितनी खामियाँ हैं
मेरा संयोजी कवच अधूरा है
मैं उतनी उत्कृष्ट नहीं हूँ, जितना मैं सोचती हूँ
(इस पैरा के दौरान क्लोरीन धीरे-धीरे घूमती है)
तो मैं चिन्तित होकर आसपास देखती हूँ
ऐसा कोई मिल जाए जिसका संयोजी कवच मेल खाता हो,
सबसे आँखें चुराते हुए,
'Hi' कहने की सारी इच्छाओं को दबाते हुए

(दोनों अभिवादन करने की कोशिश करते हैं, लेकिन बीच में ही ख़ुद को रोक लेते हैं)

लेकिन एक सुहावने दिन
जब हम दोनों को इसकी सबसे कम अपेक्षा थी
हम दोनों ने अपने-अपने समूह छोड़े
और अपनी राह पर चल पड़े
खो गए थे, लेकिन भटके नहीं थे
आशा है कि रासायनिक गतिकी
जल्दी ही अपनी भूमिका निभाएगी
जैसा कि पता चला
हमें सिर्फ़ एक बेसाख़्ता टक्कर की दरकार थी
सही दिशा से एक टक्कर
ताकि हमारी ऊर्जा की रुकावटें पार हो जाएँ
हमारी अस्थिरता नदारद हो जाए
और जो कुछ बचा
वह था एक परिचय, दो संयोजकताएँ,
दो नाम
लेकिन मैं डरी हुई थी
वह मेरे जैसी बिलकुल भी नहीं है
मैं विद्युत-धनात्मक हूँ
मैं विद्युत-ऋणात्मक हूँ
एकदम विपरीत छोरों पर
एक पूरे आवर्त की दूरी पर

क्या यह मुख़्तसर मुठभेड़
क्या यह एक 'संयोगवश मुलाक़ात'
मुझे एक दोस्त दे देगी?
या क्या मेरा अन्त साबित होगी?
हमारा सवाल असन्तुलित लगता है
शायद ऐसा होना नहीं है
क्या हमें साम्यावस्था प्राप्त करने की परवाह भी करनी चाहिए
या क्या वह ऊर्जा की बरबादी होगी?
सब्स्ट्रेट (क्रिया-पदार्थ) की बरबादी?
शायद हमें अपनी अलग-अलग दिशा में चले जाना चाहिए

(वे अलग-अलग रास्तों पर चल पड़ते हैं, दो सेकंड बाद सोडियम मुड़कर देखता है)

ऐ, रुको!
हाँ? कहो!



मैं जानता हूँ तुम सचमुच व्यस्त हो
बिलकुल सही, लोगों को चकराने में
लेकिन शायद तुम चाहोगी?
कभी मिलना?
शायद एक इलेक्ट्रॉन साझा करना?
लग तो यह ठीक रहा है
तो मैं तुम्हें वहाँ मिलूँगा
समुद्र के तट पर?
और शायद थोड़ी देर साथ बिताएँगे
-757.3 kJ/mol एन्थाल्पी पर।
क्या कह सकते हैं
पता नहीं यह हमारे लिए क्या गुल खिलाएगा
हो सकता है हमारे बीच बन्धन जुड़ जाएँ
थोड़ा आयनिक ढंग का बन्धन

और यह कहानी है कि एक महान दोस्ती कैसे शुरू हुई थी
किसने सोचा होगा कि दो विरोधी एक-दूसरे की इलेक्ट्रॉन पट्टी पूरी कर सकते हैं?
आज भी इस मशहूर जोड़ी के बारे में इतनी बातें होती हैं
यह ज़मीन और पानी दोनों जगह जीवन का निर्वाह करती है

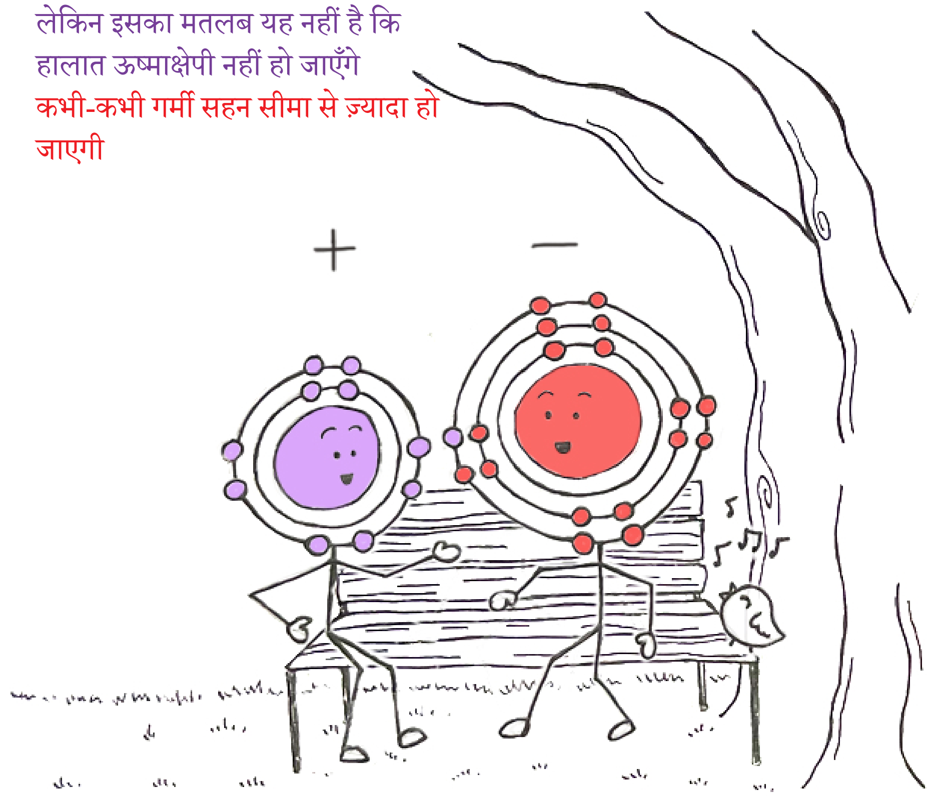
किसने सोचा होगा कि
मेरे और तुम्हारे सुकून के दायरे के बाहर
एक तत्व मौजूद है जिसमें हमें अपना घर मिलेगा

कोई ऐसा जिसके साथ साझेदारी कर सकें,
जिसके साथ अन्तर्क्रिया कर सकें
जिसके साथ बिखर सकें, जिसे कसकर पकड़ सकें

लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि
हालात ऊष्माक्षेपी नहीं हो जाएँगे
कभी-कभी गर्मी सहन सीमा से ज़्यादा हो जाएगी

लेकिन कोलाहल और झाग निकलने का मतलब यह नहीं है
कि हमारे बन्धन को टूटना होगा
तो हर बार जब हम दूर-दूर दिखें
मैं हैबर चक्र पर सवार होकर तुम्हारी गली में आ जाऊँगा

जब तक कि हम दोनों अपने जालकों को नए सिरे बनाने को तैयार न हों
हर बार, बार-बार।



नोट्स :

1. आवर्त सारणी के बहुत ही अलग गुणों वाले दो तत्व, सोडियम और क्लोरीन, मिलकर अब तक का सबसे प्रचलित लेकिन मामूली समझे जाना वाला रासायनिक यौगिक बनाते हैं। मेरी सबसे अच्छी दोस्त अंशु सरन के साथ मेरी गाढ़ी दोस्ती से प्रेरित यह शब्द कविता (जो दोनों तत्वों की ज़ुबानी कही गई है) बताती है कि काफ़ी असम्भव लेकिन सबसे गहरी दोस्तियाँ तभी बनती हैं जब हम अपने कम्फर्ट ज़ोन से बाहर निकलने की हिम्मत करते हैं। कविता कैसे पढ़ें : यह कविता एक पद/ छन्द रूप में नाटक है, जो मंच पर प्रदर्शन के लिए लिखी गई है। बैंगनी रंग की पंक्तियाँ 'सोडियम' द्वारा बोली जाती हैं, लाल रंग की 'क्लोरीन' द्वारा बोली जाती हैं और काले रंग में लिखी पंक्तियाँ दोनों द्वारा बोली जाती हैं।
2. Source of the image used in the background of the article title: Poem. Credits: Idearriba, Pixabay. URL: *https://pixabay.com/photos/poem-butterfly-literature-tale-1104997/. License: CC0.*
3. The three illustrations for this poem were inspired by sketches of the sodium and chlorine atoms by Dalia Saldanha (the author). They were conceptualised & created by Vidya Kamalesh (Artist, i wonder...) & Chitra Ravi (Editor, i wonder...). To reuse, please include following details: Credits: Dalia Saldanha, i wonder..., Jun 2022 issue. License: CC-BY-NC.


डालिया साल्दान्हा मैकगिल विश्वविद्यालय, कनाडा के केमिकल इंजीनियरिंग विभाग से पीएचडी कर रही हैं। वह पर्यावरण-अनुकूल प्रोटीन-आधारित जैव सामग्री से त्वचा सेंसर विकसित करने पर काम कर रही हैं। डालिया को वैज्ञानिक सोच वाली कविता लिखने, तैरने और इंडी बुकस्टोर्स खँगालने में मज़ा आता है। उनसे daliasaldanha96@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है।
अनुवाद : सुशील जोशी